गुरु गोरखनाथ जी

राजकीय महाविद्यालय हिसार

हिंदी विभागीय पत्रिका

देश की प्रगति और आपसी जुड़ाव के लिए हिंदी को राष्ट्रीय व्यवहार में अपनाना आवश्यक है।

राजपाल

सत्र : 2024-25

अक्टूबर, 2025

हिंदी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 01 अंक 10 अक्टूबर 2025
आश्विन | विक्रम संवत-2082

संस्थापक सम्पादक

डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक

डॉ. राजेंद्र प्रसाद
डॉ. वीरेंद्र
डॉ. देवेंद्र सिंह सांगा

छात्र सम्पादक

किरण रानोलिया
रिनू
राहुल, प्रियंका
संतोष

सम्पादकीय कार्यालय

हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522

gchisarhindi@gmail.com
dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश
संपादकीय
गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

परिचय

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - एक परिचय

एक ऐतिहासिक सिंहावलोकन
विविध
साहित्य प्रश्नोत्तरी
शब्द-सम्पदा
प्रशासनिक शब्दावली
गांधी जी के स्वदेशी मार्ग से पूरी होंगी बुनियादी ज़रूरतें
पुस्तक समीक्षा

संदेश

आज दो अक्टूबर का यह पावन दिन हमें दो महान व्यक्तित्वों – महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री जी – के जीवन दर्शन की ओर मार्गदर्शित करता है। साथ ही, इस वर्ष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी अपनी स्थापना के सौ वर्ष पूरे किए हैं। यह तीनों ही शक्तिपुंज आज के समय में अत्यधिक प्रासंगिक हैं। महात्मा गांधी का सिद्धांत 'अहिंसा परमो धर्म' आज के संघर्षपूर्ण युग में एक मार्गदर्शक सिद्धांत बना हुआ है। उनकी स्वच्छता, स्वावलंबन और सादगी की अवधारणा न केवल व्यक्तिगत जीवन बल्कि राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है। सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही हम एक न्यायपूर्ण समाज की स्थापना कर सकते हैं। लाल बहादुर शास्त्री जी ने 'जय जवान, जय किसान' का ऐतिहासिक नारा देकर राष्ट्र की सुरक्षा और आत्मनिर्भरता के दो स्तंभों को रेखांकित किया। उनकी ईमानदारी, सादगी और दृढ़ नेतृत्व की मिसाल आज भी प्रेरणा का स्रोत है। उनका मानना था कि देश की प्रगति तभी संभव है जब हमारा किसान और सैनिक सशक्त हो। इसी क्रम में, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने सौ वर्षों के सफर में राष्ट्रभक्ति, अनुशासन और समर्पण की भावना को युवाओं में संचारित करने का कार्य किया है। संघ की संगठन शक्ति और चरित्र निर्माण पर बल देना, राष्ट्र के नवनिर्माण में सहायक है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम गांधी जी की अहिंसा, शास्त्री जी की सादगी और संघ के अनुशासन व राष्ट्रभक्ति के विचारों को आत्मसात करें। ये विचार हमें एक सशक्त, समृद्ध और नैतिकता पर आधारित भारत के निर्माण की प्रेरणा देते हैं। आइए, हम सब इन मूल्यों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प लें।

जय हिन्द!

प्राचार्य
डॉ विवेक कुमार सैनी

संपादकीय

तीन प्रकाशस्तंभ और आधुनिक भारत की राह

दो अक्टूबर का दिन भारत के इतिहास में दो किंवदंतियों - महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री - के जन्मदिन के रूप में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इस वर्ष एक तीसरा पड़ाव भी जुड़ गया है - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के सौ वर्ष। यह तिकड़ी आज के उथल-पुथल भरे दौर में हमारे लिए एक मार्गदर्शक चिराग का काम करती है, जिसकी रोशनी में हमें अपने वर्तमान और भविष्य का रास्ता तलाशना चाहिए। महात्मा गांधी की अहिंसा, सत्याग्रह और सादगी की विरासत आज और अधिक प्रासंगिक हो उठी है। एक ऐसे दौर में जब सामाजिक सद्भाव पर बार-बार प्रहार हो रहे हैं, गांधी का 'सर्वोदय' और 'अंत्योदय' का दर्शन ही हमें टकराव के बजाय समन्वय की राह दिखाता है। पर्यावरण संकट के युग में उनकी 'कम उपभोग' की अवधारणा एक स्थायी भविष्य की कुंजी है। लाल बहादुर शास्त्री ने 'जय जवान, जय किसान' का जो मंत्र दिया, वह आत्मनिर्भर भारत की आधारशिला है। उनका पारदर्शी, ईमानदार और निस्वार्थ नेतृत्व राजनीतिक चरित्र के लिए एक उच्च मानदंड स्थापित करता है। उनसे सीख लेकर ही हम भ्रष्टाचार और अहंकार से मुक्ति पा सकते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सौ वर्ष का सफर संगठन, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति की भावना को समर्पित रहा है। एकात्मता और समाज कल्याण पर इसका जोर निस्संदेह सराहनीय है। आज आवश्यकता इस बात की है कि संघ गांधी और शास्त्री के सर्वसमावेशी विचारों को और अधिक आत्मसात करे, ताकि राष्ट्रनिर्माण का मार्ग और व्यापक बने।

गांधी का अहिंसा का मार्ग, शास्त्री की नैतिकता और संघ का अनुशासन - इन तीनों के समन्वय से ही एक शांतिपूर्ण, समृद्ध और सशक्त भारत का सपना साकार हो सकता है। यह त्रिवेणी हमें सिखाती है कि राष्ट्र की सेवा का अर्थ है - व्यक्ति निर्माण, चरित्र निर्माण और अंततः राष्ट्र निर्माण।

संपादक

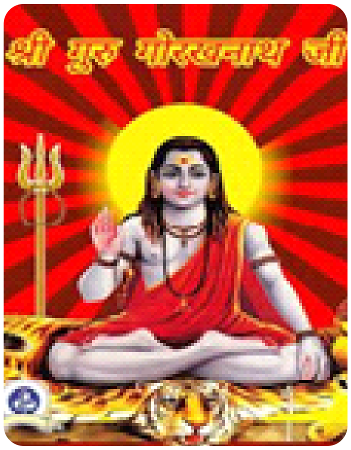

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

गतांक से आगे....

गोरक्ष संहिता

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के विचार से प्रायः सभी गोरक्षग्रंथ सूचियों में इस पुस्तक का नाम श्राता है। पं० प्रसन्न कुमार कविरत्न ने इस पुस्तक को सं० १८६७ में प्रकाशित कराया था, परन्तु इसकी कोई प्रति प्राप्त नहीं है। डॉ० बागची ने कौलावलिनिर्णय की भूमिका में नेपाल दरबार लाइब्रेरी में प्राप्त प्रति के कुछ अंशों को उद्धृत किया है जिसके अनेक श्लोक मत्स्येन्द्रनाथ के अकुलवीरतंत्र नामक ग्रन्थ से मिलते हैं तथा जिनका प्रतिपादन भी एक सा है।

डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय को प्रभासपाटण से श्री इंद्र जी शर्मा द्वारा सं० १६५० वि० में प्रकाशित गोरक्ष संहिता की एक प्रति प्राप्त हुई है जिसके इलोक पं० महावीर शर्मा द्वारा संपादित गोरक्ष पद्धति के प्रथमशतक के तीसरे से आगे के सभी श्लोक इसी गोरक्ष संहिता के ही प्रतीत होते हैं। इनके विचार में गोरक्ष संहिता वह मूलग्रन्थ है जिसका संपादन-संक्षेपण विभिन्न रुपों में किया गया है। गोरक्ष संहिता दो श्लोकों में विभाजित है जिस में षडंग योग के अंगों का पूर्ण विवेचन किया गया है।

महार्थमंजरी यह ग्रंथ महेश्वरानंद प्रणीत है और स्वयं उन्हीं की लिखी हुई "परिमल" नामक ब्याख्या से युक्त है। डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे गोरक्षकृत ग्रंथों की सूची में गिना है और यह माना है कि काश्मीरी परम्परा के अनुसार इसके रचयिता महेश्वरानंद गोरक्षनाथ ही हैं जिसका विषय ३६ तत्त्वों की व्याख्या माना गया है। किन्तु पं० ब्रजवल्लभ द्विवेदी ने महेश्वर गन्द को शिवानन्द का शिष्य और उनका समय चौदहवीं शताब्दी माना है तथा वे उनका सम्बन्ध नाथ- सम्प्रदाय से नहीं मानते क्योंकि उन्होंने कहीं भी मत्स्येन्द्रनाथ का स्मरण नहीं किया है। किन्तु श्री द्विवेदी ने अपर पर्याय गोरक्ष पर यहाँ कुछ भी विचार नहीं किया है अतः महेश्वरानंद और गोरखनाथ प्रथक व्यक्तित्व नहीं माने जा सकते । महार्थमंजरी में यह स्पष्ट किया गया है कि परमेश्वर आत्म स्वरूप से अविभिन्न है। इस परमेश्वर के परामर्श, ध्यान तथा चितन का उपाय ही इसका प्रतिपाद्य है। इसमें ३६ तत्त्वों का जो विचार है वह काश्मीर यौवमत के सर्वथा धनुकूल है। इस रचना से गोरखनाथ का काश्मीर शैवागम परम्परा से घनिष्ट- भावेन संबद्ध होना प्रमाणित होता है।

सिद्ध सिद्धान्त पद्धति इस ग्रंथ का संपादन डॉ० कल्याणी मल्लिक ने सन् १६५४ ई० में जोधपुर, हरिद्वार तथा तनजूर से प्राप्त हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर किया । जोधपुर से प्राप्त प्रति सं० १८८१ वि० की लिखी हुई है। इस ग्रंथ में छः उपदेश हैं, जिनमें क्रमशः पिण्डोत्पत्ति, पिण्डविचार, पिंडसंवित्ति, पिण्डाधार, पिण्डपदयो, समरसकरणम् तथा अवधूत योगी लक्षणम् का सांगोपांग वर्णन किया गया है। वास्तव में गोरखनाथ ने इस ग्रन्थ द्वारा अपने मत के दर्शन, साधन एवं संप्रदायादि का बहुविध विस्तृत विवेचन किया है।

योग मार्तण्ड इस ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति भी डॉ० कल्याणी मल्लिक को तनजूर से प्राप्त हुई थी, जिसका संपादन इन्होंने "सिद्ध सिद्धान्त पद्धति एण्ड अदर वर्क्स श्राफ नाथ योगीज" नामक ग्रन्थ में किया है। इसके कई श्लोक हठयोग प्रदीपिका में भी मिलते हैं। इसमें १८८ श्लोक हैं जिनमें योग के आवश्यक अंगों के पर संक्षेप में चर्चा की गई है ।

हिन्दी रचनाएँ- गोरखनाथ की प्रमुख हिन्दी रचनाएं निम्न- लिखित हैं :-

सबदी-डॉ० बड़थ्वाल ने गोरखबानी में सर्वप्रथम "सबदी" संपादित की हैं। इसमें २७५ सबदियां संपादित हैं, किन्तु सम्पादक, डॉ० बड़थ्वाल, ने केवल १८६ सबदियों को ही प्रामाणिक माना है। शेष सबदियों को उन्होंने रतननाथ, लालनाथ योगी अथवा रतनहाजी की लिखी अथवा प्रक्षिप्त माना है" इन सबदियों में गोरखनाथ ने दर्शन साधना और आध्यात्म से संबधित अपने विचार व्यक्त किये हैं। ये मुक्तक रचनाएं हैं अतः इनका एक-दूसरे से संबंध नहीं है, केवल कुछ सबदियाँ ऐसी हैं जिनका परस्पर विषयगत संबंध जोड़ा जा सकता है। इन सबदियों में गोरक्ष के सिद्धान्तों का अत्यंत व्यावहारिक और सरल निरूपण किया गया है तथा हड्योग प्रधान साधना के अनुकूल संयमों, आचारों और क्रियाओं का भी वर्णन किया गया है। इनमें संसार में ही संयम के साथ रहने का उपदेश है, संसार से भागने का नहीं क्योंकि -

षांयें भी मरिये अणषायें भी मरिये, गोरख कहे पूता संजमि ही तरिये । मधि निरंतर कीजै बास, निहचल मनुवा थिर होइ सास ।।

गुरु गोरखनाथ के पद

आदि भणंत गोरखनाथ काया गढ लीजै। काया गढ लीजै अवधू, जुगि जुगि जीजै ॥ टेक ॥ काया गढ भीतर नौ लख खाई, जंत्र फिरै गढ लिया न जाई। ऊँचे नीचे परबत झिलमिल खाई, कोटड़ी का पाणी पूरण गढ जाई ॥ इहां नहीं उहां नहीं त्रिकुटी मंझारी, सहज सुंनि में रहन हमारी। आदिनाथ नाती मछिंद्र पूता, काया गढ जीति ले गोरख अवधूता ॥

आदिनाथ कहता है- हे गोरख ! शरीर (गढ) पर विजय पाओ। अतः हे अवधू शरीर रूपी किला जीतकर युग-युग जीवन पाओ। शरीर में किले की तरह नौ छिद्र (खाई) हैं जिन - पर माया का यन्त्र घूमता है। इसी कारण संयम पाना कठिन काम है। शरीर में पर्वत की तरह ऊँचे-नीचे अंग हैं जिनमें ये नौ द्वार झिलमिल करते दिखाई देते हैं। किले में एक जलघर की कोठरी से सब जगह पानी जाता है, इसी तरह शरीर में हृदय । से सारे अंगों को रक्त का प्रवाह पहुँचता है। वह चेतन शरीर के अंगों में इधर-उधर नहीं रहता, त्रिकुटी के मध्य में उसका स्थान है। हमारी आत्मा सहज शून्य के स्थान ब्रह्मरन्ध्र में रहती है। आदिनाथ का पौत्र और मच्छन्दरनाथ का पुत्र गोरख कहता है-हे अवधूत ! इस शरीर पर संयम करो।

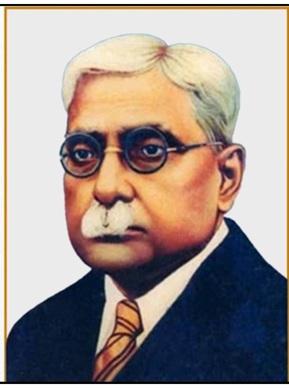

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

एक परिचय

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

रामचन्द्र शुक्ल का जन्म 1884 ईस्वी में उत्तर प्रदेश बस्ती जिले के अगोना नामक गाँव में हुआ था। इनकी माता जी का नाम विभाषी था और पिता चंद्रबली शुक्ल की नियुक्ति सदर कानूनगो के पद पर मिर्ज़ापुर में हुई तो समस्त परिवार वहीं आकर रहने लगा। जिस समय शुक्ल की अवस्था नौ वर्ष की थी, उनकी माता का देहान्त हो गया। मातृसुख के अभाव के साथ-साथ विमाता से मिलने वाले दु:ख ने उनके व्यक्तित्व को अल्पायु में ही परिपक्व बना दिया।[उद्धरण चाहिए]

अध्ययन के प्रति लग्नशीलता शुक्ल में बाल्यकाल से ही थी। किंतु इसके लिए उन्हें अनुकूल वातावरण न मिल सका। मिर्जापुर के लंदन मिशन स्कूल से 1901 में स्कूल फाइनल परीक्षा (FA) उत्तीर्ण की। उनके पिता की इच्छा थी कि शुक्ल कचहरी में जाकर दफ्तर का काम सीखें, किंतु शुक्ल उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे। पिता जी ने उन्हें वकालत पढ़ने के लिए इलाहाबाद भेजा पर उनकी रुचि वकालत में न होकर साहित्य में थी। अत: परिणाम यह हुआ कि वे उसमें अनुत्तीर्ण रहे। शुक्ल जी के पिताजी ने उन्हें नायब तहसीलदारी की जगह दिलाने का प्रयास किया, किंतु उनकी स्वाभिमानी प्रकृति के कारण यह संभव न हो सका।

1903 से 1908 तक आनन्द कादम्बिनी के सहायक संपादक का कार्य किया। 1904 से 1908 तक लंदन मिशन स्कूल में ड्राइंग के अध्यापक रहे। इसी समय से उनके लेख पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगे और धीरे-धीरे उनकी विद्वता का यश चारों ओर फैल गया। उनकी योग्यता से प्रभावित होकर 1908 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने उन्हें हिन्दी शब्दसागर के सहायक संपादक का कार्य-भार सौंपा जिसे उन्होंने सफलतापूर्वक पूरा किया। श्यामसुन्दर दास के शब्दों में शब्दसागर की उपयोगिता और सर्वांगपूर्णता का अधिकांश श्रेय रामचंद्र शुक्ल को प्राप्त है। वे नागरी प्रचारिणी पत्रिका के भी संपादक रहे। 1919 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी के प्राध्यापक नियुक्त हुए जहाँ श्यामसुंदर दास की मृत्यु के बाद 1937 से जीवन के अंतिम काल 1941 तक विभागाध्यक्ष के पद पर रहे।
2 फरवरी 1941 को हृदय की गति रुक जाने से शुक्ल का देहान्त हो गया।

कृतियाँ

मौलिक कृतियाँ

तीन प्रकार की हैं--

आलोचनात्मक ग्रंथ सूर, तुलसी, जायसी पर की गई आलोचनाएँ, काव्य में रहस्यवाद, काव्य में अभिव्यंजनावाद, रसमीमांसा आदि शुक्ल की आलोचनात्मक रचनाएँ हैं।

निबन्धात्मक ग्रन्थ उनके निबन्ध चिंतामणि नामक ग्रंथ के दो भागों में संग्रहीत हैं। चिंतामणि के निबन्धों के अतिरिक्त शुक्ल ने कुछ अन्य निबन्ध भी लिखे हैं, जिनमें मित्रता, अध्ययन आदि निबन्ध सामान्य विषयों पर लिखे गये निबन्ध हैं। मित्रता निबन्ध जीवनोपयोगी विषय पर लिखा गया उच्चकोटि का निबन्ध है जिसमें शुक्लजी की लेखन शैली गत विशेषतायें झलकती हैं। क्रोध निबन्ध में उन्होंने सामाजिक जीवन में क्रोध का क्या महत्व है, क्रोधी की मानसिकता-जैसै समबन्धित पहलुओं का विश्लेशण किया है।

ऐतिहासिक ग्रन्थ हिंदी साहित्य का इतिहास उनका अनूठा ऐतिहासिक ग्रंथ है।

अनूदित कृतियाँ शुक्ल की अनूदित कृतियाँ कई हैं। शशांक उनके द्वारा बंगला से अनुवादित उपन्यास है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अंग्रेजी से विश्वप्रपंच, आदर्श जीवन, मेगस्थनीज का भारतवर्षीय वर्णन, कल्पना का आनन्द आदि रचनाओं का अनुवाद किया। आनन्द कुमार शुक्ल द्वारा "आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का अनुवाद कर्म" नाम से रचित एक ग्रन्थ में उनके अनुवाद कार्यों का विस्तृत विवरण दिया गया है।

सम्पादित कृतियाँ सम्पादित ग्रन्थों में हिंदी शब्दसागर, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भ्रमरगीत सार,[3] सूर, तुलसी जायसी ग्रंथावली उल्लेखनीय हैं।

भाषा

क्लिष्ट और जटिल गंभीर विषयों के वर्णन तथा आलोचनात्मक निबंधों में भाषा का क्लिष्ट रूप मिलता है। विषय की गंभीरता के कारण ऐसा होना स्वाभाविक भी है। गंभीर विषयों को व्यक्त करने के लिए जिस संयम और शक्ति की आवश्यकता होती है, वह पूर्णतः विद्यमान है। अतः इस प्रकार को भाषा क्लिष्ट और जटिल होते हुए भी स्पष्ट है। उसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों की अधिकता है।

सरल और व्यवहारिक भाषा का सरल और व्यवहारिक रूप शुक्ल जी के मनोवैज्ञानिक निबंधों में मिलता है। इसमें हिंदी के प्रचलित शब्दों को ही अधिक ग्रहण किया गया है यथा स्थान उर्दू और अंग्रेज़ी के अतिप्रचलित शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। भाषा को अधिक सरल और व्यवहारिक बनाने के लिए शुक्ल ने तड़क-भड़क अटकल-पच्चू आदि ग्रामीण बोलचाल के शब्दों को भी अपनाया है। तथा नौ दिन चले अढ़ाई कोस, जिसकी लाठी उसकी भैंस, पेट फूलना, काटों पर चलना आदि कहावतों व मुहावरों का भी प्रयोग निस्संकोच होकर किया है।
शुक्ल जी का दोनों प्रकार की भाषा पर पूर्ण अधिकार था। वह अत्यंत संभत, परिमार्जित, प्रौढ़ और व्याकरण की दृष्टि से पूर्ण निर्दोष है। उसमें रंचमात्र भी शिथिलता नहीं। शब्द मोतियों की भांति वाक्यों के सूत्र में गुंथे हुए हैं। एक भी शब्द निरर्थक नहीं, प्रत्येक शब्द का अपना पूर्ण महत्व है।

शैली

शुक्ल की शैली पर उनके व्यक्तित्व की पूरी-पूरी छाप है। यही कारण है कि प्रत्येक वाक्य पुकार कर कह देता है कि वह उनका है। सामान्य रूप से शुक्ल की शैली अत्यंत प्रौढ़ और मौलिक है। उसमें गागर में सागर पूर्ण रूप से विद्यमान है। शुक्ल की शैली के मुख्यतः तीन रूप हैं:

आलोचनात्मक शैली शुक्ल ने अपने आलोचनात्मक निबंध इसी शैली में लिखे हैं। इस शैली की भाषा गंभीर है। उनमें संस्कृत के तत्सम शब्दों की अधिकता है। वाक्य छोटे-छोटे, संयत और मार्मिक हैं। भावों की अभिव्यक्ति इस प्रकार हुई है कि उनको समझने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती।

गवेषणात्मक शैली इस शैली में शुक्ल ने नवीन खोजपूर्ण निबंधों की रचना की है। आलोचनात्मक शैली की अपेक्षा यह शैली अधिक गंभीर और दुरूह है। इसमें भाषा क्लिष्ट है। वाक्य बड़े-बड़े हैं और मुहावरों का नितान्त अभाव है।

भावात्मक शैली शुक्ल के मनोवैज्ञानिक निबंध भावात्मक शैली में लिखे गए हैं। यह शैली गद्य-काव्य का सा आनंद देती है। इस शैली की भाषा व्यवहारिक है। भावों की आवश्यकतानुसार छोटे और बड़े दोनों ही प्रकार के वाक्यों को अपनाया गया है। बहुत से वाक्य तो सूक्ति रूप में प्रयुक्त हुए हैं। जैसे - बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है।

इनके अतिरिक्त शुक्ल जी के निबंधों में निगमन पद्धति, अलंकार योजना, तुकदार शब्द, हास्य-व्यंग्य, मूर्तिमत्ता आदि अन्य शैलीगत विशेषताएँ भी मिलती हैं।

Basic English and Advanced English Words

1. बेसिक: Good (अच्छा)
अडवांस: Excellent / Superb / Exceptional (उत्कृष्ट, शानदार)
2. बेसिक: Bad (बुरा)
अडवांस: Terrible / Awful / Poor (भयानक, घटिया)
3. बेसिक: Big (बड़ा)
अडवांस: Massive / Enormous / Vast (विशाल, बृहद)
4. बेसिक: Small (छोटा)
अडवांस: Tiny / Minute / Compact (नन्हा, सूक्ष्म)
5. बेसिक: Happy (खुश)
अडवांस: Delighted / Ecstatic / Joyful (आनंदित, प्रफुल्लित)
6. बेसिक: Sad (दुखी)
अडवांस: Sorrowful / Dejected / Melancholy (उदास, विषादपूर्ण)
7. बेसिक: Pretty (सुंदर)
अडवांस: Beautiful / Gorgeous / Exquisite (खूबसूरत, मनोहर)
8. बेसIC: Ugly (बदसूरत)
अडवांस: Unattractive / Hideous / Unsightly (असुंदर, विकर्षक)
9. बेसिक: Very (बहुत)
अडवांस: Extremely / Exceedingly / Incredibly (अत्यंत, अत्यधिक)
10. बेसिक: Important (महत्वपूर्ण)
अडवांस: Crucial / Vital / Significant (अत्यावश्यक, निर्णायक)
11. बेसिक: Smart (चतुर)
अडवांस: Intelligent / Brilliant / Astute (बुद्धिमान, प्रखर)
12. बेसिक: Funny (मज़ाकिया)
अडवांस: Hilarious / Witty / Amusing (खूब हंसी लाने वाला, परिहासपूर्ण)
13. बेसिक: Tired (थका हुआ)
अडवांस: Exhausted / Fatigued / Drained (निःशक्त, क्लांत)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का शताब्दी वर्ष 2025: एक ऐतिहासिक सिंहावलोकन

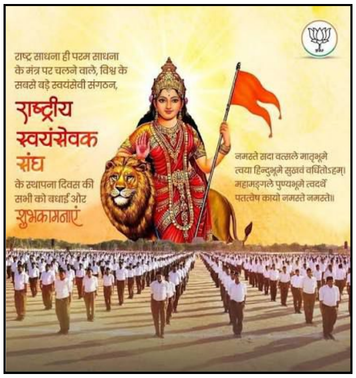

सौ वर्षों की साधना का प्रतीक सन् 2025 का वर्ष भारतीय राष्ट्रीय जीवन में एक ऐतिहासिक क्षण के रूप में चिह्नित होगा, जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी स्थापना के सौ वर्ष पूरे करेगा। 27 सितम्बर 1925 को विजयादशमी के पावन दिन डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा नागपुर में स्थापित इस संगठन ने एक साधारण शाखा से प्रारम्भ होकर विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन का रूप धारण किया है। यह शताब्दी न केवल एक संगठन की व्यक्तिगत उपलब्धि है, अपितु भारतीय राष्ट्रवाद के एक विशिष्ट दर्शन की स्थायित्व और प्रभाव का प्रमाण है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: उस युग की आहट 1920 का दशक भारत के इतिहास में एक जटिल संक्रमण काल था। जहाँ एक ओर देश स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत था, वहीं दूसरी ओर हिंदू समाज अनेकानेक विभाजनों से जूझ रहा था। डॉ. हेडगेवार ने महसूस किया कि राजनीतिक स्वतंत्रता तब तक अर्थहीन है जब तक कि समाज मजबूत और संगठित न हो। उनका दृष्टिकोण स्पष्ट था - राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी सामाजिक एकता और सांस्कृतिक चेतना में निहित है। संघ की स्थापना इसी दर्शन की मूर्त अभिव्यक्ति थी।

संगठनात्मक संरचना: अनूठी कार्यप्रणाली संघ की संगठनात्मक संरचना विश्व के अन्य संगठनों से सर्वथा भिन्न है। शाखा इसकी मूल इकाई है, जहाँ प्रतिदिन स्वयंसेवक एकत्रित होते हैं। यहाँ शारीरिक प्रशिक्षण, बौद्धिक चिंतन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। संघ की पदानुक्रमित संरचना में मुख्य कार्यवाह, सरकार्यवाह और प्रचारक जैसे पद होते हैं, जो संगठन के कार्यों का संचालन करते हैं। अनुशासन, समय की पाबंदी और निष्ठा इसकी मूलभूत विशेषताएँ हैं।

विचारधारा: सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का दर्शन संघ की विचारधारा "हिंदुत्व" के दर्शन पर आधारित है, जिसे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की संज्ञा दी जाती है। यह दर्शन जाति, भाषा और क्षेत्र के भेद से ऊपर उठकर सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास करता है। संघ "समरस समाज" के निर्माण पर बल देता है, जहाँ सामाजिक विषमताएँ समाप्त हो सकें। स्वावलंबन, त्याग और सेवा भाव इसके मूल सिद्धांत हैं।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद: छात्र जगत का प्रमुख स्तम्भ संघ से जुड़े सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली संगठनों में से एक है अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP)। 1949 में स्थापित यह संगठन आज देश की सबसे बड़ी छात्र संगठन है। ABVP ने शैक्षणिक सुधारों, छात्र हितों और राष्ट्रीय चेतना के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। परिषद का मुख्य उद्देश्य है - "विद्यार्थी शक्ति का राष्ट्र शक्ति में परिवर्तन"। यह संगठन छात्रों में राष्ट्रभक्ति, समाज सेवा और शैक्षणिक उत्कृष्टता की भावना का विकास करता है।

स्वतंत्रतोत्तर यात्रा: चुनौतियों से सामना स्वतंत्रता के बाद संघ ने अनेक चुनौतियों का सामना किया। गांधी हत्या के बाद लगे प्रतिबंध ने संगठन को कठिन परीक्षा में डाल दिया। किन्तु संघ ने लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का पालन करते हुए अपनी स्थिति स्पष्ट की। धीरे-धीरे संगठन ने विभिन्न सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामोद्योग और सहकारिता के क्षेत्र में अनेक संस्थाओं की स्थापना हुई।

समकालीन प्रासंगिकता: नए युग में अस्तित्व वैश्वीकरण और डिजिटल युग में संघ की प्रासंगिकता पर प्रश्न उठाना स्वाभाविक है। किन्तु संघ ने समय के साथ स्वयं को ढालने का प्रयास किया है। युवाओं तक पहुँचने के लिए नवीन माध्यमों का उपयोग, सामाजिक मुद्दों पर सक्रिय भूमिका और राष्ट्रीय हित के प्रश्नों पर मुखरता इसके उदाहरण हैं। आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक समरसता के लिए चलाए जा रहे अभियान संघ की सक्रियता को दर्शाते हैं।

सेवा के क्षेत्र: समाज निर्माण की ओर संघ की विशेषता रही है कि उसने समाज के विभिन्न क्षेत्रों के लिए विशिष्ट संगठनों का निर्माण किया। विद्या भारती शिक्षा के क्षेत्र में, सेवा भारती समाज कल्याण के क्षेत्र में, और वनवासी कल्याण आश्रम आदिवासी कल्याण के क्षेत्र में सक्रिय हैं। ABVP ने शैक्षणिक संस्थानों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये सभी संगठन मिलकर एक व्यापक सामाजिक परिवर्तन का सूत्रपात करते हैं।

उपसंहार: शताब्दी का संदेश राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष का यह अवसर हमें अतीत के मूल्यांकन और भविष्य की योजना का अवसर प्रदान करता है। संघ की सफलता का रहस्य उसकी लोकतांत्रिक संरचना, स्वयंसेवकों का समर्पण और राष्ट्रभक्ति की भावना में निहित है। ABVP जैसे संगठनों ने इस विचारधारा को शैक्षणिक परिसरों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आलोचनाएँ और चुनौतियाँ रही हैं, किन्तु संघ ने उनसे सीखते हुए अपना मार्ग प्रशस्त किया है। भविष्य में संघ का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है - एक ऐसे भारत के निर्माण में सहायक बनना जो आधुनिकता और परंपरा के समन्वय से निर्मित हो, जहाँ सभी वर्गों के लिए समान अवसर उपलब्ध हों, और जो विश्व कल्याण की भावना से ओत-प्रोत हो।

यह शताब्दी केवल उत्सव मनाने का नहीं, अपितु नई चुनौतियों के लिए तैयार होने का अवसर है। संघ के इन सौ वर्षों ने यह प्रमाणित किया है कि स्थायी मूल्यों और लचीले दृष्टिकोण का समन्वय ही किसी भी संगठन को दीर्घजीवी बना सकता है। राष्ट्र निर्माण की इस यात्रा में संघ का अगला पड़ाव और भी रोचक एवं चुनौतीपूर्ण होगा।

1. POOJA - 23-10-2001
2. USHA - 22-10-1999
3. ANJALI - 29-10-2002
4. GULSHAN - 22-10-1996
5. SANJAY - 14-10-2002
6. RENU BALA - 28-10-20001
7. Rahul = 04/10/2003
8. Monika = 07/10/2000
9. Manisha = 18/10/2001
10. Pinki = 05/10/2000

एमए हिंदी के टॉप टेन विद्यार्थियों को बनाया गया फ्रेशर पार्टी में विशिष्ट अतिथि

पांच बजे न्यूज

हिसार। स्थानीय गुरु गोरखनाथ जी, राजकीय महाविद्यालय के हिंदी विभाग में एम.ए. फाइनल वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा प्रथम वर्ष के छात्रों के स्वागत में गुरुवार को एक भव्य फ्रेशर पार्टी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 'मिस फ्रेशर' रीतू और 'मिस्टर फ्रेशर' दीपक को चुना गया। महाविद्यालय में 2024-25 सत्र में गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय में एमए हिंदी के टॉप टेन विद्यार्थियों को विशिष्ठ अतिथि के रूप में बुलाया गया था, जिन्हें प्राचार्य ने सम्मानित किया। कार्यक्रम में पहुंची प्राचार्य डॉ. अंजू चौधरी और उप प्राचार्य डॉ. राजेन्द्र सेवदा ने उन्हें इस कामयाबी के लिए बधाइयाँ दी और हिंदी विभाग के प्रोफेसर की सराहना की द्व उन्होंने कहा कि विद्यार्थी की कामयाबी में सबसे ज्यदा खुशी उनके शिक्षक और माँ बाप को होती है। हिंदी विभाग के प्रोफेसर और मीडिया सह प्रभारी डॉ . राजेन्द्र प्रसाद ने बताया कि एमए हिन्दी में गुरु गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय हिसार की टॉप 10 में 9 बचे शामिल हुए है। एमए हिन्दी के चौथे सेमेस्टर के परीक्षा परिणाम में कल्पना ने गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया, खुशबू ने द्वितीय, आरजू ने तृतीय, रेनू ने चतुर्थ, अंजलि ने छठा, वंदना ने सातवां, दीपिका ने आठवां, मोनिका ने 9 वां और सुषमा ने 10 वां स्थान प्राप्त किया। वरिष्ठ विद्यार्थियों ने गीत, नृत्य, कविता-पाठ और हास्य अभिनय से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। वहीं नवप्रवेशी छात्रों ने भी मंच पर अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए सबका मन मोह लिया। विभागाध्यक्ष डॉ. कमलेश देवी ने ने अपने उद्बोधन में कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों में आपसी सौहार्द, सहयोग और सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करते हैं। कार्यक्रम का संचालन लिजा और अनुष्का ने ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन संदीप ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर हिंदी विभाग से डॉ सुनीता, डॉ. राजपाल, डॉ देवेन्द्र, डॉ वीरेन्द्र, जीतबाला, डॉ. सुमन, डॉ. कविता व एमए हिंदी की विद्यार्थी उपस्थित रहे।

प्रियंका

साहित्य प्रश्नोत्तरी

1. 'बीसलदेव रासो' का प्रमुख रस है? - श्रृंगार
2. आचार्य शुक्ल एवं हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बीसलदेव रासो का रचनाकाल माना है? - विक्रम सं० १२१२
3. ' आल्ह खण्ड' किस 'रासो ग्रंथ' से विकसित माना जाता है? - परमाल रासो
4. आल्हा-ऊदल नामक दो वीर सरदारों की वीरतापूर्ण लड़ाइयों का वर्णन किस 'रासो' ग्रंथ में है? - परमाल रासो
5. 'आल्ह-खंड' का सर्वप्रथम प्रकाशन किसने किया था? - १८६५ ई० में फर्रुखाबाद में तत्कालीन जिलाधीश 'चाल्स इलियट' ने।
6. 'आल्ह खंड' का अंग्रेजी अनुवाद किसने किया? - वाटरफील्ड
7. 'आल्ह खंड' लोकगीत के रूप में कहाँ गाया जाता है? उत्तर प्रदेश के बैसवाड़ा, पूर्वांचल, मध्यप्रदेश के बुंदेलखंड में।
8. आल्हा गीत किस ऋतु विशेष में गाया जाता है? - बरसात में
9. आचार्य शुक्ल ने हिंदी का प्रथम महाकवि और हिन्दी का प्रथम महाकाव्य किसे माना है? - क्रमशः चंदरवरदायी, पृथ्वीराज रासो
10. "बारह बरस लौ कूकर जीवै, अरु तेरह लौ जियै सयार। बरस अठारह क्षत्रिय जीवै, आगे जीवन कौ धिक्कार। - पंक्तियाँ किस ग्रंथ की हैं। परमाल रासो (आल्ह-खंड)
11. जनश्रुति के अनुसार किस कवि और उसके आश्रय दाता नरेश का जन्म एक दिन हुआ था और दोनों ने एक ही दिन यह संसार भी छोड़ा था? - चंदरवरदायी, पृथ्वीराज चौहान
12. पृथ्वीराज रासो' के सर्ग या अध्याय को क्या कहा गया है? - समय
13. 'पृथ्वीराज रासो' में कितने समय (सर्ग या अध्याय) हैं? - ६९

किरण रानोलिया

शब्द-युग्म
(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

शब्द	अर्थ
आरुण	अरुण से संबंधित
आरुणि	उद्धलक
आहुत	हवि रूप में अर्पित
आहूत	बुलाया गया
आहूति	बुलाना
आहार	भोजन
उपहार	भेंट
आहुति	होम

रीतू मिस और दीपक बने मिस्टर फ्रेशर
विद्यार्थी को कामयाबी मिलने पर सबसे ज्यादा खुशी माता-पिता को होती है

संवाद न्यूज एजेंसी

फ्रेशर पार्टी के दौरान सम्मानित करते कॉलेज स्टाफ। स्रोत : संस्थान

हिसार। गुरु गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय के हिंदी विभाग में एमए फाइनल वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा प्रथम वर्ष के छात्रों के स्वागत में फ्रेशर पार्टी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में रीतू मिस तो मिस्टर फ्रेशर दीपक को चुना गया। महाविद्यालय में 2024-25 सत्र में गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय में एमए हिंदी के टॉप टेन विद्यार्थियों को विशिष्ट अतिथि के रूप में बुलाया गया था। जिन्हें प्राचार्य ने पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम में पहुंची प्राचार्य डॉ. अंजू चौधरी और उप प्राचार्य डॉ. राजेंद्र सेवदा ने कहा कि विद्यार्थी की कामयाबी में सबसे ज्यादा खुशी उनके शिक्षक और माता-पिता को होती है। हिंदी विभाग के प्रोफेसर और मीडिया सह प्रभारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने बताया कि एमए हिंदी में गुरु गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय की टॉप 10 में 9 बच्चे शामिल हुए है। एमए हिंदी के 4 सेमेस्टर के परीक्षा परिणाम में कल्पना ने गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। खुशबू ने दूसरा, आरजू ने तीसरा, रेनू ने चौथा, अंजलि ने छठा स्थान, वंदना ने सातवां, दीपिका ने आठवां, मोनिका ने 9वां और सुषमा ने 10 वां स्थान प्राप्त किया।

वरिष्ठ विद्यार्थियों ने गीत, नृत्य, कविता-पाठ और हास्य अभिनय से सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया। वहीं, नवप्रवेशी छात्रों ने भी मंच पर अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए सबका मन मोह लिया।

विभागाध्यक्ष डॉ. कमलेश देवी ने कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों में आपसी सौहार्द, सहयोग और सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करते हैं। इस अवसर पर हिंदी विभाग से डॉ. सुनीता, डॉ. राजपाल, डॉ. देवेंद्र, डॉ. बीरेंद्र मौजूद रहे।

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

I am to add = मुझे यह भी लिखना है

Ibid = वही

Identity = पहचान

Ignorance = अनभिज्ञता

I have the honour to say = सादर निवेदन है

Illegal = अवैध

Illegitimate = अधर्मज/अवैध

Illicit = निषिद्ध/अयुक्त

Immediate officer = आसन्न अधिकारी

Immigrant = अप्रवासी

Implement = कार्यान्वित करना

Implication = विवक्षा/फँसना/फँसाना

Indigenous stores = देशी माल/देशी स्टोर

Indiscretion = अविवेक

Indispensable = अपरिहार्य

In due course = यथावधि

Inference = अनुमिति/अनुमान

Initials = लघु हस्ताक्षर

Injunction = निषेधाज्ञा

In lump sum = एक मुश्त/एक बार में

In modification of = के रूपांतरण में

In official capacity = पद की हैसियत से

Inoperative = अप्रवृत्त

In order = क्रम से/व्यवस्थित

In order of preference = अधिमान्यता क्रम से

Inperpetuity = सदैव के लिए/शाश्वत

In preference to = सदैव की अपेक्षा

In public interest = लोक हित में

In pursuance of = के अनुकरण में

In regard to = के विषय में

In respect of = के विषय में/के लिए

गांधी जी के स्वदेशी मार्ग से पूरी होंगी बुनियादी ज़रूरतें

दो अक्तूबर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जन्मदिवस है। तात्कालिक रूप से तो यह एक बहाना है गांधीजी और उनके मूल्यों को याद करने का। लेकिन गांधी तो वह प्रकाशपुंज हैं जो हमेशा ही देश और दुनिया में शोषण और अन्याय के खिलाफ उठने वाली हर आवाज का मार्गदर्शन करते रहे हैं। लेकिन यह एक अजीब विडंबना है कि अपने ही देश में उन्हें मजबूरी का प्रतीक बना दिया गया है। मुहावरा ही चल पड़ा कि मजबूरी का नाम महात्मा गांधी। लेकिन क्या सचमुच गांधी मजबूरी का नाम हैं। शायद नहीं। क्योंकि जिस शख्स ने अहिंसा और सत्याग्रह की ताकत से उस ब्रिटिश साम्राज्य को इस देश से उखाड़ फेंका जिसके बारे में कहा जाता था कि उसका सूरज कभी अस्त नहीं होता, तो वह मजबूरी का नहीं मजबूती का ही प्रतीक हो सकता है। बार-बार गांधी-दर्शन की प्रासंगिकता की बात उठती है और हम भूल जाते हैं कि गांधी-दर्शन कोई जड़ दर्शन नहीं है कि उसमें रत्ती भर भी बदलाव न हो सके। आज गांधी की प्रासंगिकता उन प्रतीकों में नहीं है जो आजादी के आंदोलन के समय अहम माने गए थे, बल्कि उन मूल्यों में है जिन्हें गांधीजी ने अपने जीवन में उतारा था। वैसे भी समय के साथ-साथ चीजें बदलती हैं। जी रहे हैं। आज गांधीजी के प्रतीक हू-ब-हू वैसे ही लागू नहीं हो सकते लेकिन उनके सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांतों की मूल आत्मा आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी पहले थी। यही कारण है कि आज दुनिया में अन्याय और तानाशाही के खिलाफ चल रहे तमाम आंदोलनों को प्रेरणा गांधी से ही मिल रही है। फिर चाहे वह तहरीर चौक का आंदोलन हो, वालस्ट्रीट का आंदोलन हो, तानाशाही के खिलाफ आंग सांग सू की का सत्याग्रह हो या पिछले साल लोकपाल के लिए भारत में चला अन्ना का आंदोलन हो। सबके केंद्र में अहिंसा और सत्याग्रह की ही ताकत रही है। यह एक विडंबना है कि जिस गांधी को कभी शांति का नोबेल पुरस्कार नहीं मिल सका था, बाद में उसी गांधी के तमाम शिष्यों को शांति के नोबेल पुरस्कार से नवाजा गया। एक तरह से यह गांधी विचार की ही ताकत है। गांधी को लेकर तमाम भ्रम भी रहे है जैसे गांधी मशीनों और शहरों के विरोधी थे। हालांकि ये भ्रम गांधी को कम जानने का ही नतीजा हैं। महात्मा गांधी ने आधुनिक अर्थशास्त्र को शास्त्र मानने से ही इनकार करते हुए इसे लूट का शास्त्र कहा है जो व्यक्तियों, समाजों व प्रकृति के शोषण व लूट पर आधारित है। आधुनिक अर्थव्यवस्था में मनुष्य को केवल उपभोक्ता मान लेने और उसके उपभोग को बढ़ाते रहने, कृत्रिम रूपए भी को ही अर्थिक विकास मानने का आवश्यक परिणाम यह हुआ है कि दुनिया में तमाम सामाजिक व राजनीतिक हिंसा तो हो ही रही है साथ ही प्राकृतिक संसाधनों के प्रति भी भयंकर हिंसा हुई है और आज तो दुनिया के अस्तित्व को ही खतरा पैदा हो गया है। सवाल उठता है कि क्या इस तरह का अर्थिक विकास बिना हिंसा के संभव है ?

गांधीजी के अनुसार मनुष्य होने का अर्थ ही है नैतिक होना, इसलिए वह यह नहीं मानते कि मनुष्य केवल उपभोक्ता है। उसका नैतिक होना ही मनुष्यत्व की निशानी है। आधुनिक अर्थव्यवस्था में तो शोषण व शोषित दोनों का ही नैतिक पतन होता है। एक तरफ अनियंत्रित भोग- विलास है तो दूसरी ओर घोर विपन्नता। गांधीजी के लिए केवल अर्थिक विकास ही सब कुछ नहीं है। असली बीज तो है नैतिक विकास, मनुष्यत्व का विकास, इसलिए वह ऐसी अर्थव्यवस्था की कल्पना कर सके जिसमें शोषण विहीन, समता आधारित अर्थिक विकास के साथ ही साथ व्यक्ति का नैतिक विकास भी निरंतर होता रहे। गांधीजी के अनुसार सच्चा अर्थशास्त्र तो वह है जिसके द्वारा उपलब्ध संसाधनों के उपयोग से स्थानीय लोगों की जरूरतों को पूरा किया जाता है। आधुनिक अर्थशास्त्र के समस्त सिद्धांतों के मूल में तीन ही प्रमुख समस्यों का अध्ययन किया किया जाता है, वह है उत्पादन, उपभोक्ता व वितरण। गांधी जी ने ऐसे उत्पादन तंत्र की वकालत की है जो आवश्यकता आधारित थी। चूंकि उत्पादन आवश्यकता आधारित होता है तो फिर उसके लिए बाजार बनाने की आवश्यकता नहीं होती, न ही अति-उत्पादन की समस्या ही खड़ी होती है। जब उत्पादन का तंत्र जरूरत पर आधारित व स्थानीय होता है तो वितरण की समस्या ही नहीं होती। क्योंकि वितरण की समस्या तभी पैदा होती है

जब बड़े पैमाने पर एक जगह उत्पादन किया जाता है। इसके साथ विकेंद्रित उत्पादन व्यवस्था से आय का अधिक सामान वितरण होता है जिससे समाज में व्याप्त असमानता को दूर किया जा सकता है। विकेंद्रित एवं श्रम आधारित उत्पादन प्रक्रिया द्वारा आय के साथ ही साथ संपत्ति का भी वितरण होता है। चूंकि इस तरह की उत्पादन व्यवस्था में लागत का अधिक हिस्सा मजदूर के पास जाता है। इस कारण से क्रयशक्ति का भी अच्छा वितरण होता है जिससे वस्तुओं की प्रभावी मांग बढ़ती है और उत्पादन आवश्यकताओं के अनुसार होता है। इसका जो सबसे बड़ा लाभ है वह सभी तरह के शोषण की संभावना न्यूनतम होना। यह सच है कि गांधी जी अधिक पूंजी आधारित व बड़ी-बड़ी मशीनों द्वारा बड़े पैमाने पर एक ही स्थान पर किए जाने वाले उत्पादन व उसको संभव बनाने वाली व्यवस्था के खिलाफ थे, पर इसका आशय यह नहीं कि गांधी जी बड़े पैमाने पर उत्पादन के ही खिलाफ थे। वह तो बड़े पैमाने पर उत्पादन हो इसके ही पक्ष में थे। परंतु इसके लिए गांधीजी उपरोक्त पूंजीवादी उत्पादन व्यवस्था को उलट देना चाहते थे। उन्होंने कहा है कि बड़े पैमाने पर उत्पादन हो इससे मेरा कोई विरोध नहीं है बल्कि मैं तो इसका प्रबल समर्थक हूं पर यह अधिक उत्पादन लोगों के द्वारा होना चाहिए न कि बड़े कारखानों में अत्यधिक पूंजी के प्रयोग से। इस तरह की उत्पादन व्यवस्था में मशीनों का उपयोग हो ही नहीं, ऐसा नहीं है। पर मशीन 'लोगों द्वारा उत्पादन' की व्यवस्था को मजबूत करने वाली होनी चाहिए न कि उसे उखाड़ फेंकने वाली। गांधीजी के मशीन संबंधी विचारों के संदर्भ में काफी भ्रम फैला हुआ है, जैसे कि वे मशीन ही खिलाफ थे जबकि उन्होंने स्पष्ट कहा है कि वह किसी भी मशीन को स्वीकार करने के पक्ष में हैं जो निम्न दो शतों को पूरा करती हैं-1. उसके प्रयोग से मनुष्य बेकार नहीं होने चाहिए तथा 2. उसके द्वारा शोषण को बढ़ावा नहीं मिलना चाहिए। के गांधीजी को हर वह यंत्र स्वीकार है जिससे मनुष्य द्वारा किए जा रहे श्रम में कमी होती हो। आखिर चर्खा भी तो एक यंत्र ही है। गांधीजी मारक यंत्रों के एकदम खिलाफ थे, लेकिन ऐसे सादे औजारों, साधनों या यंत्रों का, जो व्यक्ति की मेहनत बचाए और झोंपड़ियों में रहने वालों का बोझ कम करे, उसका वे स्वागत करते हैं। यहां पर समझना आवश्यक है कि विज्ञान तो कुछ हद तक सार्वभौमक और सार्वकालिक हो सकता है, लेकिन टेक्नोलॉजी विज्ञान का उपयोग है जो एक समाज अपनी समझ, अपने साधन और अपनी जरूरतों के हिसाब से करता है। यानी टेक्नोलॉजी प्रत्येक समाज और देश की अपनी होती है। हमारे जीवन-मूल्य और हमारी जरूरतें यूरोप और अमरीका से अलग हैं। इसलिए हमारी टेक्नोलॉजी का भी इनसे अलग होना जरूरी है। इस बुनियादी बात को गांधीजी ने समझा था। जहां तक उपयोग का प्रश्न है गांधी जी 'अपरिग्रह' के सिद्धांत को स्वीकार करते हैं। अमर्यादित मांग व्यक्ति समाज व प्रकृति तीनों के लिए ही हानिकारक है। परंतु इसका आशय यह नहीं कि गरीबी में रहा जाए। गरीबी से तो गांधीजी को घृणा ही थी। मनुष्य की बुनियादी जरूरतों का वर्णन करते हुए गांधीजी ने पांच चीजों पर जोर दिया है, (1) भोजन, (2) वस्त्र, (3) निवास, (4) शिक्षण, (5) स्वास्थ्य रक्षा। उनका विचार था कि इनकी पूर्ति स्थानीय स्तर पर और स्थानीय संसाधनों के माध्यम से संभव है। इसके लिए हमें पूरी तरह स्वदेशी का मार्ग अपनाना चाहिए। इसके लिए इनके उत्पादन की प्राथमिक इकाई गांव है, उसमें उत्पादन का संयोजन ग्राम सभा को करना चाहिए, इसके लिए आवश्यकतानुसार उपलब्ध संसाधनों का वह विनियोग करेगी। कोई भी व्यक्ति उनके लिए मजदूरी की दृष्टि से काम नहीं करेगा और न कोई बंटवारा विशिष्ट कुशलता के आधार पर होगा। अन्य बड़े उद्योगों की यदि आवश्यकता हो तो वह लगाए जाएंगे, पर गांधीजी के अनुसार उनका स्वामित्व स्थानीय समाज के पास होना चाहिए। इसी तरह धन व संपत्ति के वितरण के संदर्भ में गांधीजी ने ट्रस्टीशिप का सिद्धांत देश के सामने रखा था जिसमें यह निहित है कि जिस व्यक्ति के पास जरूरत से ज्यादा संपत्ति है तो वह उसे अपनी न मानकर समाज की मानेगा तथा उसमें से अपनी जरूरत भर का उपयोग करके बाकी धन व आय समाज के भले के लिए उपयोग करेगा। ऐसा भारत में पहले भी होता रहा है। इसी तरह गांधीजी व्यापार के संदर्भ में भी मानते थे कि यदि उत्पादन हमारी जरूरतों से ज्यादा होगा तो अवश्य ही उसका व्यापार किया जाएगा पर यह शोषण के लिए नहीं किया जाएगा, न ही उत्पादन व्यापार के लिए होगा। क्योंकि संसाधनों पर पहला अधिकार स्थानीय लोगों का है, उनकी जरूरतों को पूरा करने के बाद ही संसाधनों का उपयोग व्यापार की जरूरतों के लिए किया जा सकता है। इस तरह हम देखते हैं कि गांधीजी एक ऐसी अर्थ रचना प्रस्तुत करते हैं जिसमें शोषण, हिंसा व लूट को कोई स्थान प्राप्त नहीं है। यदि देश इस रास्ते पर चलता तो आज स्थिति दूसरी ही होती। पर दुर्भाग्य कि हमारे नीति नियताओं ने पश्चिम की ही नकल करने की ठानी और आज हम अपनी एक भी समस्या को जड़-मूल से दूर करना तो दूर लोगों को भोजन, वस्त्र, निवास, शिक्षा आदि बुनियादी जरूरतों की भी पूरी नहीं कर सके हैं। जबकि गांधीजी द्वारा प्रतिपादित अर्थव्यवस्था में यह पूरी होना ही पहली शर्त है, प्राथमिकता की बात है। अब भी यह हो सकता है। जरूरत है इस दिशा में आगे बढ़ने की प्रतिवद्धता की व गांधी विचार में निष्ठा की।

पुस्तक समीक्षा

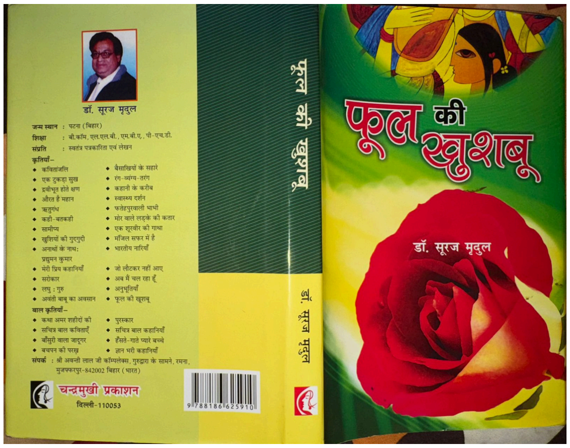

लेखक: डॉ. सूरज मृदुल
पुस्तक: “फूल की खुशबू"
मूल्य: ₹350.00
पृष्ठ: 152
चन्द्रमुखी प्रकाशन दिल्ली-110053

"फूल की खूशबू" डॉ. सूरज 'मृदुल' द्वारा रचित एक ऐसा निबंध संग्रह है, जो हिंदी निबंध साहित्य की गरिमा और गहराई को प्रतिबिंबित करता है। यह कृति न केवल लेखक के बौद्धिक संस्कारों और साहित्यिक प्रतिबद्धता का परिचय देती है, बल्कि पाठकों के लिए एक सार्थक और शिक्षाप्रद अनुभव भी प्रदान करती है।

निबंध साहित्य की सबसे गंभीर विधा मानी जाती है, और इस दृष्टि से "फूल की खूशबू" एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। संकलन में शामिल निबंध भारतीय संस्कृति, सामाजिक मूल्यों, और समकालीन विषयों पर केंद्रित हैं। इनमें 'हिंदी भाषा', 'बंगाल की संस्कृति', 'पाश्चात्य संस्कृति का दुष्प्रभाव' और 'अच्छा संस्कार ही बच्चे को महान बनाता है' जैसे विषय शामिल हैं, जो लेखक की विविध रुचियों और गहन चिंतन का परिचय देते हैं।

डॉ. मृदुल की भाषा-शैली सरल एवं प्रभावशाली है, जो पाठकों को सहज ही अपने साथ बहा ले जाती है। उन्होंने निबंधों को तीस शीर्षकों के अंतर्गत वर्गीकृत किया है, जिससे विषय-वस्तु में स्पष्टता और क्रमबद्धता बनी रहती है। लेखक ने अपने निबंधों में भावुकता, बौद्धिकता और कल्पना का सुंदर समन्वय किया है, जो पाठक के मानसिक स्तर को समृद्ध करता है।
एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि डॉ. मृदुल ने अपने निबंधों में मताभिमान से मुक्त रहते हुए समन्वयात्मक दृष्टिकोण अपनाया है। उनकी वृत्ति दोषों की अपेक्षा गुणों का अनुसंधान करने की रही है, जो पाठकों में सकारात्मक दृष्टि विकसित करने में सहायक है। उनके चिंतन में परिपक्वता और अभिव्यक्ति में स्पष्टता है, जो निबंधों को और भी प्रभावशाली बनाती है।
हिंदी निबंध परंपरा को आगे बढ़ाते हुए यह संकलन न केवल विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए उपयोगी है, बल्कि सामान्य पाठकों के लिए भी मानसिक खुराक प्रदान करता है। इसमें शामिल निबंध पाठकों को भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराते हुए उन्हें सामाजिक और नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक करते हैं।
निःसंदेह, "फूल की खूशबू" हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति है, जो अपनी विषय-वस्तु, भाषा-शैली और प्रस्तुति के कारण पाठकों का ध्यान आकर्षित करने में सफल रही है। डॉ. मृदुल के इस प्रयास की सराहना की जानी चाहिए, और यह कृति हिंदी साहित्य के क्षेत्र में एक सार्थक योगदान साबित होगी।

समीक्षक
डॉ राजपाल
हिंदी विभाग
गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार